अर्थव्यवस्था बनाम विचारधारा: क्या चुनावी नतीजों का आधार आर्थिक असंतोष है?



दुनिया के विभिन्न देशों में सत्तारूढ़ नेताओं की चुनावी हार को केवल लोकतंत्र या विचारधारा की जीत के रूप में नहीं देखना चाहिए। इसके पीछे जनता का आर्थिक असंतोष, महंगाई, जीवनयापन की बढ़ती लागत, बेरोजगारी और भविष्य को लेकर अनिश्चितता जैसे कारण अधिक प्रभावशाली हो सकते हैं। मतदाता अक्सर किसी विशेष विचारधारा के समर्थन में नहीं, बल्कि मौजूदा सरकार के प्रदर्शन से निराश होकर अपना निर्णय लेते हैं। स्पष्ट है कि चुनावों में विचारधारा से अधिक आर्थिक वास्तविकताएँ निर्णायक बनती जा रही हैं।

क) वैश्विक स्तर पर लोकतंत्र के सामने चुनौती -

- स्वीडन के वी- डेम इंस्टीट्यूट के अनुसार, औसत व्यक्ति को आज लगभग उतनी ही लोकतांत्रिक स्वतंत्रताएँ प्राप्त हैं, जितनी 1978 में थीं। इससे दुनिया में लोकतांत्रिक संस्थाओं के कमजोर होने की चिंता सामने आती है।
- ब्राजील और सर्बिया में सत्ता परिवर्तन को लोकतंत्र के पुनरुत्थान के रूप में देखा जा रहा है। लेकिन संपादकीय का मानना है कि इन चुनावी परिणामों को लोकतांत्रिक विचारधारा की जीत मानना जल्दबाजी होगी।
- हार्वर्ड के प्रोफेसर स्टीवन लेवित्स्की के अनुसार, कई देशों में सत्ताधारी दलों की हार के पीछे मुख्य कारण सत्ता-विरोधी जनभावना हो सकती है।

इसके प्रमुख कारण हैं -

- कोविड-19 महामारी के बाद आर्थिक अव्यवस्था।
- सरकारों की आसान मौद्रिक नीतियां।
- बढ़ती महंगाई।
- मध्यम वर्ग की क्रयशक्ति में गिरावट।
- आम नागरिकों में सरकार के प्रति अविश्वास।
- लेख के अनुसार, 2020 से 2024 के बीच 55 चुनावों में से 41 में सत्ताधारी दलों को हार का सामना करना पड़ा है। यह दिखाता है कि आर्थिक असंतोष चुनावी राजनीति को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारण है।

(ख) युवाओं की प्राथमिकता विचारधारा नहीं, आर्थिक भविष्य बन गई है।

- सर्बिया में युवाओं ने लगभग दो वर्षों तक राष्ट्रपति अलेक्जेंडर वुसिक के खिलाफ आंदोलन किया। इस आंदोलन में विद्यार्थियों के साथ शिक्षाविदों, डॉक्टरों और अन्य पेशेवरों ने भी भाग लिया।
- नेपाल में जेन जी ने मौजूदा सरकार को हटाने पर मजबूर कर दिया था।
- फिलहाल फ्रांस और यूरोप के कुछ देशों में बढ़ती महंगाई और जीवनयापन की अन्य व्यवस्थाओं के विरुद्ध प्रदर्शन हो रहे हैं।
- अमेरिका के मध्यावधि चुनाव में राष्ट्रपति की पार्टी की करारी हार हुई है।
- लेकिन सवाल यह है कि क्या युवाओं का संघर्ष केवल लोकतांत्रिक मूल्यों के लिए था या वे अपने आर्थिक भविष्य को लेकर भी चिंतित थे?

आज युवाओं की प्रमुख चिंताएं हैं -

- रोजगार के अवसर।
- बेहतर जीवन स्तर।
- भ्रष्टाचार से मुक्ति।
- आर्थिक स्थिरता।
- भविष्य को लेकर सुरक्षा और विश्वास।

अतः मतदाता केवल विचारधारा के आधार पर सरकार नहीं चुनते, बल्कि अपने जीवन की आर्थिक परिस्थितियों और भविष्य की संभावनाओं के आधार पर भी निर्णय लेते हैं।

लोकतंत्र में चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का माध्यम नहीं, बल्कि सरकारों के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने की प्रक्रिया भी हैं। एक मजबूत लोकतंत्र वही है, जहाँ राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ आर्थिक सुरक्षा, सामाजिक न्याय और बेहतर जीवन की संभावनाएँ भी सुनिश्चित हों।

'द टाइम्स ऑफ इंडिया' में प्रकाशित संपादकीय पर आधारित। 27/10/26